RNI No. MPHIN/2015/64451 डाक पंजीयन क्र. MP/IDC/1525/2022-2024 IPT डाक द्वारा प्रेषण प्रति शुक्रवार indianplasttimes@gmail.com
DPR No. N-193
www.Indianplasttimes.in

इंडियन प्लास्ट टाइम्स

■ INDORE ■ 08 MAY TO 14 MAY 2024 ■ प्रति बुधवार ■ वर्ष 09 ■ अंक 33 ■ पृष्ठ 8 ■ कीमत 5 रु.

Inside News

दुनिया के सबसे धनी शहरों में मुंबई और दिल्ली कहां, टॉप पर किस शहर का दबदबा? Page 3

50 प्रतिशत विदेशी उड़ानों पर भारतीय एयरलाइन कंपनियों का होगा कब्जा Page 4

अरहर 30%, उड़द 15%... दालों की उछलती कीमतों ने क्यों बढ़ाई टेंशन? Page 7

editorial

सड़क दुर्घटना बीमा

भारत में सबसे अधिक सड़क दुर्घटनाएं और मौतें होती हैं. हाल के वर्षों में वैश्विक स्तर पर ऐसी दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों में कुछ कमी आयी है, पर भारत में इसमें बढ़ोतरी हो रही है. विशेषज्ञों का मानना है कि अगर दुर्घटना के एक घंटे के भीतर पीड़ित को चिकित्सा उपलब्ध हो जाए, तो जान बचने की संभावना बहुत बढ़ जाती है. केंद्रीय सड़क यातायात एवं राजमार्ग मंत्रालय इस संदर्भ में एक बड़ी पहल करते हुए पीड़ितों को डेढ़ लाख रुपये तक का कैशलेस उपचार मुहैया कराने की योजना बना रहा है. इस योजना के तहत दुर्घटना के दिन से सात दिनों तक पीड़ितों का उपचार उन अस्पतालों में हो सकेगा, जो आयुष्मान भारत योजना के तहत पंजीकृत हैं. इसमें उन पीड़ितों के इलाज का भी प्रावधान है, जिनके पास पहले से कोई बीमा नहीं है या जो बिना बीमा वाले वाहन की चपेट में आये हैं. छत्तीसगढ़ में मार्च से इस योजना का परीक्षण चल रहा है. उसके नतीजों के आधार पर योजना की विस्तृत रूप-रेखा बनायी जायेगी. राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण परीक्षण कार्यक्रम की मुख्य एजेंसी है. इसमें पुलिस, अस्पताल और राज्य स्तरीय संस्थाओं की भागीदारी भी है. इस कार्यक्रम में अस्पतालों को आयुष्मान भारत योजना के गंभीर दुर्घटना पैकेज से भुगतान किया जा रहा है, जिसे बाद में वाहन दुर्घटना कोष से चुकाया जायेगा. सड़क दुर्घटना बीमा योजना जनवरी 2022 में बनी एक योजना का विस्तार है, जिसके तहत वाहन दुर्घटना कोष को स्थापित किया गया था. साल 1989 में बने सोलाटियम फंड के 76 करोड़ रुपये से नये कोष को शुरू किया गया था. उस योजना में केवल ऐसे पीड़ितों को मुआवजा दिया जाता है, जो ऐसे वाहनों का शिकार हुए हों, जो दुर्घटना के बाद भाग गये हों. रिपोर्ट के अनुसार, मंत्रालय ने बीमा कंपनियों से थर्ड पार्टी प्रीमियम में से 2.97 प्रतिशत का योगदान करने का निवेदन किया है. कोष के साथ-साथ वाहनों के बीमा और दोषी चालकों के अर्थ दंड से भी इस योजना के लिए धन जुटाया जायेगा. संभवतः इसके लिए कुछ बजट आवंटन भी किया जायेगा. दुर्घटना के बाद वाहन चालकों के भाग जाने तथा कानूनी पचड़े से बचने की सोच के कारण कई पीड़ित जल्दी अस्पताल नहीं पहुंच पाते. दोषी चालकों के लिए कठोर दंड का प्रावधान किया गया है. केंद्र और राज्य सरकारों ने ऐसे लोगों को पुरस्कृत करने की व्यवस्था भी की है, जो पीड़ितों को अस्पताल पहुंचाते हैं. राष्ट्रीय राजमार्गों पर तो वाहनों की व्यवस्था होती है, पर ऐसा अन्य सड़कों के साथ नहीं है. यह भी पाया गया है कि अनेक टोल सड़कों पर निगरानी और एंबुलेंस की समुचित व्यवस्था नहीं है. इस पर ध्यान देने की जरूरत है.

भारत से पिछड़ा चीन...

निफ्टी 50 ने शंघाई कंपोजिट को दिखाया अपना दम!

नई दिल्ली। एजेंसी

बीते कुछ बरसों में भारतीय इकॉनमी के साथ-साथ स्टॉक मार्केट ने भी दुनियाभर में अपनी छाप छोड़ दी है। यहां पर मार्केट कैपिटलाइजेशन तेजी से बढ़ा है और रिटेल निवेशकों की भागीदारी बढ़ने से ये अब ज्यादा भरोसेमंद हो गया है।

भारत की अर्थव्यवस्था की तरह ही देश का शेयर बाजार भी तेज रफ्तार से दौड़ लगाकर चीन को पीछे छोड़ चुका है। रिटर्न की रेस में चीन को पछाड़कर भारतीय शेयर बाजार आगे निकल गया है। अइइ म्यूचुअल फंड की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत के मुकाबले चीन का इक्विटी मार्केट बड़े अंतर से पीछे चल रहा है।

चीन की जीडीपी (उउइ) भारत के मुकाबले 5 गुना बड़ी है, लेकिन, उसका इक्विटी मार्केट कैपिटलाइजेशन भारत से महज दोगुना ही है जानकारों का मानना है कि बीते कुछ बरसों में भारतीय इकॉनमी के साथ-साथ स्टॉक मार्केट (एद्मे ईंवू) ने भी दुनियाभर में अपनी छाप छोड़ दी है। यहां पर मार्केट कैपिटलाइजेशन तेजी से बढ़ा है और रिटेल निवेशकों की भागीदारी बढ़ने से ये अब ज्यादा भरोसेमंद हो गया है।

इकॉनमी-इक्विटी का शानदार प्रदर्शन !

अगर 2004 से 2021 के बीच की बात करें तो चीन की इकोनॉमी (Economy) ने भारत की GDP को तेजी से पीछे छोड़ दिया था। लेकिन, अब ड्रैगन की रफ्तार सुस्त पड़ने लगी है. DSP म्यूचुअल फंड रिपोर्ट के मुताबिक बीते 3 साल में भारतीय अर्थव्यवस्था और इक्विटी बाजारों ने चीन के मुकाबले से बेहतर प्रदर्शन किया है। फिलहाल, भारत का निफ्टी 50 इंडेक्स 23 गुना ट्रेलिंग अर्निंग पर कारोबार कर रहा है।वहीं, शंघाई कंपोजिट की ट्रेडिंग सिर्फ 11 गुना पर ही सीमित है। ट्रेलिंग अर्निंग के मायने हैं कि एक खास अंतराल के बाद शेयर के भाव में कितना उछाल आया है।

कम क्वालिटी का सस्ता मार्केट है चीन !

उभरते हुए बाजार क्वॉलिटी में एक-दूसरे से काफी अलग होते हैं। जैसे कि भारत को हाई-क्वॉलिटी और पारंपरिक से महंगा माना जाता है। वहीं, चीन और दक्षिण कोरिया जैसे बाजारों के बारे में कहा जाता है कि वो कम क्वालिटी वाले सस्ते मार्केट हैं। दरअसल, भारतीय शेयर बाजार में देश और दुनिया के निवेशकों की दिलचस्पी और भरोसा बढ़ने की कई वजह हैं। भारत के पास काम करने लायक नौजवान आबादी है, इसके साथ ही यहां पर कई नीतिगत सुधार भी किए गए हैं और सप्लाई चेन में भी नए सिरे से बदलाव किया गया है।

अमेरिका के बराबर इक्विटी रिटर्न !

जानकारों का भी मानना है कि इन सकारात्मक वजहों से निवेशक भारतीय बाजार के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। भारत में इक्विटी पर रिटर्न अमेरिका के बराबर है, जो प्रीमियम वैल्यूएशन को वाजिब ठहराता है. इस लिहाज से ब्राजील ने भी निवेशकों का ध्यान अपनी तरफ खींचा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ब्राजील में ना केवल महत्वपूर्ण इनकम बढ़ोतरी नजर आ रही है बल्कि ये बढ़ोतरी प्रभावशाली वैल्यूएशन ट्रेंड के साथ है। वहीं, भारत की पहचान उसकी शानदार अर्निंग ग्रोथ से बनी है, लेकिन वैल्यूएशन प्रीमियम है। रिपोर्ट कहती है, 'प्रीमियम वैल्यूएशन के चलते भारतीय इक्विटी में सौदेबाजी की ज्यादा गुंजाइश नहीं है और भारतीय इक्विटी में सेफ्टी का भी एक मसला है।

मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर की रफ्तार अप्रैल में भी दमदार, बढ़ती मांग से नए ऑर्डर्स में इजाफा

नई दिल्ली। एजेंसी

कारखानों में बने माल की अच्छी डिमांड के चलते अप्रैल में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का दमखम बना रहा। सेक्टर की ग्रोथ कुछ नरम हुई, लेकिन कामकाजी हालात में जबरदस्त सुधार दिखा। इसमें पिछले साढ़े तीन वर्षों में दूसरा सबसे तेज सुधार दर्ज किया गया। बड़ी हुई डिमांड के चलते कंपनियों ने बड़े पैमाने पर कच्चे माल की खरीद की। अप्रैल में HSBC इंडिया मैन्युफैक्चरिंग परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (PMI) 58.8 पर आ गया, जो मार्च में 59.1 पर था। मार्च का लेवल पिछले 16 वर्षों का हाई था इश्ह का आंकड़ा 50 से ऊपर रहने का मतलब ग्रोथ होता है। इससे नीचे के आंकड़े से सुस्ती का पता चलता है। HSBC में चीफ इंडिया इकॉनमिस्ट प्रांजल भंडारी ने कहा कि डिमांड मजबूत रहने से उत्पादन बढ़ा, हालांकि मार्च के मुकाबले कुछ सुस्ती रही। अप्रैल में मैन्युफैक्चरर्स के माल के लिए देसी-विदेशी खरीदारों के बीच अच्छी डिमांड रही। सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों ने इस साल अभी के मुकाबले ज्यादा उत्पादन का अनुमान दिया है। अप्रैल में बिजनेस कॉन्फिडेंस भी इस उम्मीद पर मजबूत हुआ कि डिमांड अच्छी बनी रहेगी। मौजूदा डिमांड और आने वाले दिनों में इसमें संभावित बढ़ोतरी को देखते हुए कंपनियों ने मौजूदा वित्त वर्ष की पहली तिमाही की शुरुआत में और स्टाफ हायर किया। भंडारी ने कहा, 'सप्लायरों के डिलीवरी टाइम में सुधार हुआ। इससे खरीदारी बढ़ी। इसके अलावा आने वाले दिनों के बेहतर रहने के अनुमान को देखते हुए कंपनियों ने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई।'

एक्सपोर्ट बढ़ाने पर हो जोर

हालांकि मैटीरियल और लेबर कॉस्ट बढ़ने के चलते मैन्युफैक्चरर्स ने अपने उत्पादों के दाम अप्रैल में बढ़ा दिए। भंडारी कहा, 'कच्चे माल और लेबर की कॉस्ट अधिक रहने के चलते इनपुट कॉस्ट बढ़ी। हालांकि इंफ्लेशन हिस्टॉरिकल ऐवरेज से नीचे बनी हुई है। कंपनियों ने अच्छी डिमांड को देखते हुए ऊंची कॉस्ट का बोझ कंज्यूमर्स पर डाल दिया, जिससे उनके मार्जिन में सुधार दिखा। एचएसबीसी इंडिया मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई को करीब 400 मैन्युफैक्चरर्स के पास भेजे गए सवालों के जवाब के आधार पर तैयार किया जाता है।

भारत में कारोबार करना अगले कुछ महीने नहीं होगा आसान! जानिए ऐसा क्यों

नई दिल्ली। एजेंसी

भारत में मार्च 2024 के महीने में वित्तीय हालात पहले से बेहतर हुए हैं. इसका मतलब ये है कि उधार लेना और बाजार में पैसा लगाना दोनों आसान हुआ. मगर आने वाले अगले कुछ महीनों में देश में कारोबार करना और लोन लेना मुश्किल हो सकता है. ये पता कैसे चला? दरअसल क्रिसिल नाम की एक संस्था हर साल फाइनेंशियल कंडीशन इंडेक्स (इण्ढ) जारी करती है. इस इंडेक्स से पता चलता है कि बाजार में पैसा कितनी आसानी से प्रवाह कर रहा है. रिपोर्ट के अनुसार, मार्च में लगातार दूसरे महीने कारोबार करना आसान हुआ. मार्च में ये इंडेक्स 40 बेसिस प्वाइंट्स बढ़कर 1.0 हो गया, जो अगस्त 2023 के बाद सबसे ऊंचा है. लगातार दो महीने फरवरी और मार्च में वित्तीय हालात सुधरने की दो वजह रिपोर्ट में सामने आई है. एक वजह है विदेशों से ज्यादा पैसा भारत में निवेश के लिए आया. दूसरा कारण है बैंकों के पास पैसा ज्यादा होना, जिससे लोन लेना या कारोबार के लिए पैसा निकालना आसान हो गया.

कारोबार के लिए आने वाले कुछ महीने कैसे हैं मुश्किल?

बैंकों की ओर से दिए जाने वाले लोन जरूर बढ़े हैं मगर कुछ जगहों पर थोड़ी कमी भी आई है. इसकी वजह ये है कि रिजर्व बैंक (RBI) ने कुछ नियम बदले हैं, इससे कुछ कंपनियों को मिलने वाले लोन और व्यक्तिगत लोन (जैसे कार लोन) पर थोड़ा अंकुश लगा है. रिजर्व बैंक के इन बदलावों का असर आने वाले समय में पूरी अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है.

आरबीआई ने इस साल ब्याज दरों (रेपो रेट) में अभी कोई बदलाव नहीं किया है. देखा जाए तो पूरी दुनिया में महंगाई कम होने की रफ्तार धीमी है. इसलिए दूसरे बैंकों ने भी अभी ब्याज दरें कम नहीं की हैं. दूसरा भारत में इस साल अच्छे मानसून का अनुमान है जिससे महंगाई घट सकती है. लेकिन अचानक मौसम में बदलाव और कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने का भी जोखिम है. सरकारी बॉन्ड की यील्ड (यानी ब्याज दर) बढ़ गई है क्योंकि बाजार को लगता है कि आरबीआई जल्द ब्याज दरें कम नहीं करेगा. इसी कारण आने वाले कुछ महीनों में हो सकता है कि लोन लेना और कारोबार करना थोड़ा मुश्किल हो जाए, क्योंकि ब्याज दरें ज्यादा रहने वाली हैं और RBI ने भी कुछ सख्त नियम बनाए हैं.

मार्च में कारोबार करना कैसे हुआ आसान?

बीते मार्च में विदेशी निवेशकों का बाजार में पैसा आने से हालात बेहतर हुए हैं. फरवरी में जहां 3.8 अरब डॉलर का निवेश आया था, वहीं मार्च में यह आंकड़ा बढ़कर 6.3 अरब डॉलर हो गया. इसमें भी शेयर बाजार में निवेश सबसे ज्यादा था. शेयर बाजार में फरवरी के 0.2 अरब डॉलर के मुकाबले मार्च में 4.2 अरब डॉलर का निवेश आया. बॉन्ड बाजार में भी निवेश आया लेकिन फरवरी के 2.7 अरब डॉलर से घटकर मार्च में 1.6 अरब डॉलर रहा. ज्यादा निवेश आने की एक अहम वजह ये है कि भारत को वैश्विक बॉन्ड इंडेक्स में शामिल करने की तैयारी चल रही है. इस वजह से कर्ज के बाजार में जमकर निवेश हो रहा है. इसमें लगातार 12 महीनों से बढ़ोतरी हो रही है.

लिक्विडिटी घटी, पर बहुत ज्यादा नहीं

बैंकों में पैसा पहले से ज्यादा आसानी से उपलब्ध हो गया है. आरबीआई ने फरवरी के मुकाबले मार्च में कम पैसा बाजार में डाला. इसका एक कारण है सरकारी खर्च बढ़ जाना और ब्याज दर में कमी. जब बैंकों में पैसा आसानी से आने लगा, तो स्वाभाविक रूप से ब्याज दरों में भी कमी आती है. उदाहरण के लिए कमर्शियल पेपर (CP) पर लगने वाला ब्याज 32 बेसिस प्वाइंट कम होकर 8.15% हो गया. बैंकों में जमा राशि पर मिलने वाला ब्याज भी कम हुआ. 6 महीनों वाले सर्टिफिकेट्स ऑफ डिपॉजिट (CDs) पर मिलने वाला ब्याज 15 बेसिस प्वाइंट कम होकर 7.67% हो गया. मतलब ये कि कई तरह के छोटी अवधि के कर्ज सस्ते हो गए. मार्च में सेंसेक्स और निफ्टी दोनों में करीब 1इ की बढ़त दर्ज की गई. ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि भारत की आर्थिक वृद्धि के आंकड़े अच्छे रहे और विदेशी निवेशकों ने भी भारतीय शेयर बाजार में ज्यादा पैसा लगाया. हालांकि फरवरी के मुकाबले मार्च में बैंकों से दिया जाने वाला कर्ज की वृद्धि दर थोड़ी कम हुई.

नए वित्तीय वर्ष में ब्याज दरों में बदलाव नहीं

नए वित्तीय वर्ष में रिजर्व बैंक ने अभी रेपो रेट में कोई बदलाव नहीं किया है. इस वजह से लगातार 14वें महीने ब्याज दरें वहीं रहेंगी. वहीं आरबीआई ने अपना रुख भी नहीं बदला है. सेंट्रल बैंक अब भी पैसे की सप्लाई को बाजार में से थोड़ा कम करने की ओर ध्यान दे रहा है. इस कारण बैंक ब्याज दरें अभी भी ऊंची बनी हुई हैं. ये दरें कोरोना महामारी से पहले के औसत से भी ज्यादा हैं. जैसे एक साल की अवधि के लिए दिए जाने वाले लोन (MCLR) और गाड़ियों के लिए लिए जाने वाले लोन पर लगने वाली ब्याज दरें पिछले महीने की तरह ही 8.8% और 9.77% हैं. घर खरीदने के लिए लिए जाने वाले लोन पर लगने वाली ब्याज दरों में थोड़ी बढ़ोतरी हुई है. यह दर अब 9.31इ है. वहीं पिछले चार महीनों से कच्चे तेल की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है. मार्च में भी यही रुझान देखने को मिला. फरवरी में कच्चे तेल की कीमत 83.8 डॉलर प्रति बैरल थी, जो मार्च में बढ़कर 85.4 डॉलर प्रति बैरल हो गई. दरअसल दुनियाभर में राजनीतिक अस्थिरता के चलते कच्चे तेल की कीमतें बढ़ रही हैं. इसका असर भारत में भी पड़ता है, क्योंकि हमें कच्चा तेल आयात करना पड़ता है.

RBI के फैसले का भविष्य में क्या होगा असर?

मौसम का भारत की अर्थव्यवस्था पर बहुत असर पड़ता है. खास तौर पर इसका असर खाने-पीने की चीजों और महंगाई पर होता है. मौसम विभाग (घ्श्ऊ) ने इस साल अच्छी बारिश का अनुमान जताया है तो इससे खाने-पीने की चीजों की कीमतें कम हो सकती हैं. लेकिन गर्मी का सितम और कच्चे तेल की कीमतों पर भी नजर रखनी होगी. ये दोनों चीजें महंगाई बढ़ा सकती हैं.क्रिसिल का अनुमान है कि फिलहाल अभी ब्याज दरें ऊंची रहने वाली हैं. इन सबका असर यह हो सकता है कि भले ही भविष्य में ब्याज दरें कम हों आने वाले कुछ महीनों में कारोबार करना और लोन लेना अभी भी थोड़ा मुश्किल रहेगा. साथ ही, इस साल लोन की रफ्तार और कुल मिलाकर अर्थव्यवस्था की रफ्तार भी थोड़ी धीमी रहने का अंदेशा है. अच्छी बात ये है कि इस साल भारत को ग्लोबल बॉन्ड इंडेक्स में शामिल किया जा सकता है. इससे विदेशी निवेशक भारतीय बाजार में ज्यादा पैसा लगाएंगे और भारत की विदेशी लेन-देन की स्थिति मजबूत हो सकती है.

Google Wallet और Gpay में क्या है अंतर, यूजर्स पर क्या होगा फायदा?

नई दिल्ली। एजेंसी

Google Wallet को ऑफिशियल तौर पर भारत में लॉन्च कर दिया गया है। वही गूगल पे पहले से मौजूद है। ऐसे में यूजर्स कंफ्यूज हैं कि जब पहले से गूगल ऐप मौजूद है, तो गूगल वालेट क्या काम करेगा, तो इसी कंफ्यूजन को दूर करने के लिए जानते हैं कि आखिर गूगल वालेट और गूगल पे कैसे एक-दूसरे से अलग हैं?

गूगल पे और गूगल वॉलेट में क्या है अंतर

गूगल ने साफ कर दिया है कि गूगल पे एक पेमेंट ऐप है। वही गूगल वालेट एक डिजिटल डॉक्यूमेंट रखने का ऐप है। साधारण शब्दो में समझें, तो जब पेपर ट्रेन टिकट और सिनेमा हाल टिकट मिलती थी। साथ ही पेपर फॉर्म में सारे एजुकेशन से लेकर ऑफिशियल डॉक्यूमेंट मौजूद होते थे, तो उसे रखने के लिए फिजिकल वालेट थे, लेकिन आज के दौर में डॉक्यूमेंट, ट्रेन, बस और सिनेमा हाल टिकट के साथ ऑफिशियल और पर्सनल डॉक्यूमेंट डिजिटल हो गए हैं, जिसे रखने के लिए डिजिटल वालेट की जरूरत होती है। इसी डिजिटल वालेट को गूगल ने पेश किया है। सरकार की ओर से ग्ष्ठम्द्भ ऐप को पेश किया गया था। वो भी एक तरह का डिजिटल वालेट है, जबकि गूगल पे एक ऑनलाइन यूपीआई पेमेंट ऐप है।

गूगल वॉलेट में रख पाएंगे ये दस्तावेज

■फ्लाइट पास ■ट्रांजिट कार्ड्स ■इवेंट टिकट ■बोर्डिंग पास ■गिफ्ट कार्ड ■क्रेडिट कार्डडेबिट कार्ड

कहां से करें डाउनलोड

गूगल वालेट को गूगल प्ले स्टोर पर लिस्ट कर दिया गया है। जहां से यूजर्स गूगल वालेट को डाउनलोड कर सकते हैं। हालांकि ग्ध्ए बेस्ड डिजाइस जैसे आईफोन को गूगल वालेट के लिए इंतजार करना होगा।

विदेशी निवेशकों के लिए आसान हुआ ये सेगमेंट, आरबीआई ने नियमों में किया बदलाव

नई दिल्ली। एजेंसी

विदेशी निवेशकों के लिए डेरिवेटिव सेगमेंट में निवेश करना अब आसान हो गया है. इसके लिए रिजर्व बैंक ने फेमा नियमों (फॉरेन एक्सचेंज मैनेजमेंट एक्ट) में बदलाव किया है.

रिजर्व बैंक ने इस संबंध में दो नोटिफिकेशन जारी किया है. पहला नोटिफिकेशन अथॉराइज्ड डीलरों के लिए परमिशन के दायरे में विस्तार करने को लेकर है. इसके अनुसार, अथॉराइज्ड डीलर अब भारत से बाहर रहने वाले किसी व्यक्ति के साथ मंजूरी प्राप्त डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट के लिए भारत में या भारत से बाहर मार्जिन पोस्ट व कलेक्ट कर सकते हैं.

इन सौदों पर भी लागू है बदलाव

ऐसे अथॉराइज्ड डीलर देश से बाहर निवास करने वाले व्यक्ति के साथ मंजूरी प्राप्त डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट के मार्जिन पर ब्याज भी पा सकते हैं या उसका भुगतान कर सकते हैं. आरबीआई के अनुसार, ये बदलाव दो अथॉराइज्ड डीलरों के बीच होने वाले डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट पर भी लागू होंगे, बशर्ते उनमें से एक किसी विदेशी बैंक की शाखा हो.

ऐसे कर पाएंगे डेरिवेटिव लेन-देन

इसी तरह का एक बदलाव बैंकों की विदेशी शाखाओं या अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्रों में स्थित बैंकिंग यूनिट के जरिए होने वाले डेरिवेटिव लेनदेन के लिए भी किया गया है. इसके बाद अथॉराइज्ड डीलर अब किसी विदेशी निकाय के साथ डेरिवेटिव में लेन-देन कर रहे अपने ग्राहक के लिए भारत में या भारत से बाहर मार्जिन को पोस्ट व कलेक्ट कर सकते हैं.

निवेशकों के लिए ये काम आसान

रिजर्व बैंक के द्वारा किए गए ये बदलाव विदेशी निवेशकों के लिए डेरिवेटिव सेगमेंट में निवेश करना और डेरिवेटिव सौदों में लेन-देन करना आसान बना देते हैं. बदलाव के बाद विदेशी निवेशकों के लिए भारत में और भारत से बाहर किए गए दोनों तरह के सौदों में मार्जिन पाना आसान हो गया है.

विदेश में ऐसे खुलवा सकते हैं खाता

सेंट्रल बैंक ने अलग से एक नोटिफिकेशन में बताया कि अब भारत में रहने वाला कोई अथॉराइज्ड डीलर देश से बाहर किसी व्यक्ति के जरिए परमिटेड डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट पर मार्जिन पोस्ट व कलेक्ट करने के लिए स्पेशल अकाउंट खुलवा सकता है. ये इंटेरेस्ट बीयरिंग अकाउंट भारतीय रुपये या विदेशी मुद्रा में खुलवाए जा सकते हैं. ब्याज का लेन-देन इस अकाउंट से किया जा सकता है. भारत में रहने वाले निवेशकों के लिए ऐसे अकाउंट को किसी विदेशी निकाय के जरिए खुलवाना, होल्ड कराना और मेंटेन कराना संभव हो गया है.

दुनिया के सबसे धनी शहरों में मुंबई और दिल्ली कहां, टॉप पर किस शहर का दबदबा?

नई दिल्ली। एजेंसी

दुनिया के टॉप 50 सबसे दौलतमंद शहरों में मुंबई और दिल्ली ने भी जगह बनाई है। न्यूयॉर्क ने इस लिस्ट में अपने दबदबे को कायम रखा है। वह दुनिया के सबसे धनी शहरों की लिस्ट में शीर्ष पर है। इसे इंटरनेशनल वेल्थ माइग्रेशन स्पेशलिस्ट हेनले एंड पार्टनर्स ने ग्लोबल डेटा इंटेलिजेंस फर्म न्यू वर्ल्ड वेल्थ के साथ बनाया है। रिपोर्ट में न्यूयॉर्क के मजबूत असर पर जोर दिया गया है। इसकी कुल संपत्ति 3 ट्रिलियन डॉलर से अधिक है। इस शहर में 3,49,500 मिलियनेयर, 744 सेंटी-मिलियनेयर और 60 बिलियनेयर हैं। मुंबई और दिल्ली लिस्ट में 24वें और 37वें स्थान पर हैं। पिछले साल दिल्ली और मुंबई के साथ बेंगलुरु, कोलकाता और हैदराबाद भी सूची में शामिल थे। सैन फ्रांसिस्को और सिलिकॉन वैली सहित उत्तरी कैलिफोर्निया के खाड़ी क्षेत्र में पिछले दस वर्षों में उल्लेखनीय संपत्ति बढ़ोतरी देखी गई है। टोक्यो पहले दुनिया का सबसे अमीर शहर हुआ करता था। वह अब अपने हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (HNWI) की आबादी में कमी के कारण तीसरे

स्थान पर आ गया है। इसके उलट सिंगापुर चौथे स्थान पर पहुंच गया है। यहां मिलियनेयर की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। यह एशिया में एक प्रमुख फाइनेंशियल हब के रूप में स्थापित हुआ है।

रैंकिंग में नीचे आया है लंदन

लंदन रैंकिंग में नीचे गिर गया है। अब पांचवें स्थान पर है। जबकि लॉस एंजिल्स अमीर निवासियों की बढ़ोतरी के साथ छठे स्थान पर आ गया है। पेरिस यूरोप का सबसे अमीर शहर बना हुआ है। वहीं, सिडनी हाल के वर्षों में पर्याप्त धन बढ़ोतरी के बाद आठवें स्थान पर है।

चीन के कई शहरों ने लिस्ट में बनाई जगह

चीन इस सूची में प्रमुखता से शामिल है। उसके कई शहरों ने इस लिस्ट में जगह बनाई है। बीजिंग ने पहली बार शीर्ष 10 में प्रवेश किया है। वहीं, शेन्जेन में मिलियनेयर आबादी में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। यह धनी लोगों के लिए सबसे तेजी से बढ़ने वाले शहर के रूप में पहचाना जाता है।

दुबई मध्य पूर्व का सबसे अमीर शहर है। वहीं, अबू धाबी में विकास की संभावना दिख रही है। नैरोबी और केप टाउन अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में वैश्विक धन परिदृश्य में भविष्य के दावेदार के रूप में उभर रहे हैं।

इस बीच मुंबई और दिल्ली भी सूची में 24वें और 37वें स्थान पर जगह बनाने में कामयाब हुए हैं। हालांकि, पिछले साल दिल्ली और मुंबई के साथ बेंगलुरु, कोलकाता और हैदराबाद भी लिस्ट में शामिल थे।

अक्षय तृतीया पर ओरा के बेहतरीन डायमंड ज्वेलरी कलेक्शन संपूर्ण, ज्वेलरी पर 25 प्रतिशत की छूट

इंदौर। आईपीटी नेटवर्क

हिंदू संस्कृति में अक्षय तृतीया सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक है। यह दिन लोगों के जीवन में विशेष महत्व रखता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन शुरू किया गया कोई भी उद्यम सफल होता है, इसलिए यह दिन बड़े निवेश एवं बहुमूल्य ज्वेलरी खरीदने के लिए उपयुक्त होता है। इस शुभ दिन के महत्व को पहचानते हुए ओरा फाईन ज्वेलरी - द लीडिंग डायमंड डेस्टिनेशन आपको अपनी बेहतरीन ज्वेलरी के साथ समृद्धि की नई सुबह भव्यता और स्टाईल से शुरू करने के लिए आमंत्रित कर रहा है।

नया लॉन्च किया गया अक्षय तृतीया कलेक्शन क्राफ्ट्समैनशिप और इनोवेशन के प्रति ब्रांड की प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करता है। जो लोग स्टेटमेंट पीस चाहते हैं, उनके लिए ओरा हीरों से जड़े हुए खूबसूरत नेकलेस पेश कर रहा है, जो हर गति के साथ टिमटिमाती हुई जगमगाहट प्रदान करते हैं। इस कलेक्शन में चिक डिज़ाईन से लेकर आधुनिक डिज़ाईन तक बहुत विस्तृत पैटर्न शामिल हैं, जो पारंपरिक लीफ मोटिफ से प्रेरित हैं। हीरे की चूड़ियाँ और ईयररिंग्स इस विशेष अवसर पर लग्ज़री और सॉफिस्टिकेशन प्रदर्शित करती हैं। इस त्योहार को और ज्यादा खुशनुमा एवं यादगार बनाने के लिए ओरा ने यह लग्ज़री सेट केवल 7,49,999 रुपये के विशेष मूल्य में पेश किया है। इस एक्सक्लुसिव सेट की जादुई चमक 74,999 रुपये के डाउन पेमेंट और शेष बची हुई राशि 9 महीने की ईएमआई में चुकाकर भी प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा, ओरा अपनी ज्वेलरी की संपूर्ण श्रृंखला पर 25 प्रतिशत की एक्सक्लुसिव छूट दे रहा है, जिसमें उनके नए लॉन्च किए गए कलेक्शन भी शामिल हैं।

फोनपे ने अक्षय तृतीया 2024 के अवसर पर निश्चित कैशबैक ऑफर को पेश किया

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

भारत के प्रमुख फिनटेक प्लेटफॉर्म फोनपे ने इस वर्ष अक्षय तृतीया के शुभ और पावन अवसर के लिए आज एक लाजवाब ऑफ़र की घोषणा की है। 10 मई 2024 को, यूज़र फोनपे ऐप पर न्यूनतम 1000 रुपए के ऑर्डर मूल्य पर 2000 रुपए तक का निश्चित कैशबैक प्राप्त कर सकते हैं। यह ख़ास ऑफ़र, जो विशेष रूप से फोनपे पर उपलब्ध होगा, केवल 24 कैरेट डिजिटल गोल्ड की एक बार की खरीद पर ही लागू है। इसके लिए यूज़र कई पेमेंट माध्यम जैसे ळझ्इ, ळझ्इ थ्रू, क्रेडिट और डेबिट कार्ड, वॉलेट और गिफ्ट कार्ड के जरिए पेमेंट कर सकते हैं। इस त्योहार की खुशियों को बढ़ाने के लिए, फोनपे ने 12 मई तक कैरेटलेन स्टोर्स पर डिजिटल गोल्ड रिडीम करने के लिए एक खास ऑफ़र दिया है। इस ऑफ़र की अनोखी बातें ये हैं: सोने के सिक्के पर अतिरिक्त 2% की छूट, अनस्टडेड ज्वेलरी पर अतिरिक्त 4% की छूट, स्टडेड ज्वेलरी पर अतिरिक्त 10% की छूट। फोनपे, कैरेटलेन, सेफगोल्ड और MMTC-PAMP से उच्चतम शुद्धता वाला सोना ऑफ़र करता है, जो डिजिटल गोल्ड व्यवस्था में कुछ अग्रणी और भरोसेमंद नाम हैं। हालांकि फोनपे ऐप पर डिजिटल गोल्ड खरीदने के कई फायदे हैं।

उच्चतम शुद्धता सुनिश्चित करना: ग्राहक फोनपे पर पार्टनर के ज़रिए ऑफ़र किए गए 99.99% शुद्धता प्रमाणित 24K डिजिटल सोना खरीद सकते हैं। ग्राहक 24*7 अपने घर बैठे आराम से डिजिटल गोल्ड खरीद सकते हैं। जब भी ग्राहक अपना स्टोर किया हुआ सोना बेचेंगे, उसके 48 घंटे के अंदर पैसा उनके बैंक खाते में आ जाता है। इंश्योरेंस वाले बैंक ग्रेड लॉकर में स्टोरेज: डिजिटल रूप से खरीदे गए सर्टिफाइड 24K गोल्ड पर शून्य मेकिंग शुल्क होता है और इसे फ्री ङ बैंक-ग्रेड गोल्ड लॉकर में स्टोर किया जाता है। ग्राहक अपनी पसंद से किसी भी रकम से डिजिटल गोल्ड में निवेश कर सकते हैं।

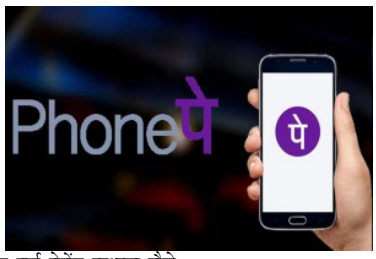

सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग में अब नहीं उठेंगे भारतीय मसालों पर सवाल, सरकार ने कर दिया पक्का इंतजाम

नई दिल्ली। एजेंसी

सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग में एमडीएच और एवरेस्ट के मसालों पर सवाल उठने के बाद भारत के स्पाइसेज बोर्ड ने इन देशों को निर्यात होने वाले मसालों की टेस्टिंग के बारे में निर्देश जारी किया है। दोनों देशों को निर्यात किए जाने वाले मसालों में एथिलीन ऑक्साइड (ETO) की जांच अनिवार्य कर दी गई है। 6 मई से ऐसी जांच अवश्य करनी होगी और स्पाइसेज बोर्ड से इस बारे में सर्टिफिकेट मिलने पर ही इन दोनों देशों को मसाले भेजे जाएंगे। स्पाइसेज बोर्ड ने अपने सर्कुलर में कहा, 'स्पाइस प्रोडक्ट्स में एथिलीन ऑक्साइड होने से जुड़ी चिंताओं को देखते हुए स्पाइसेज बोर्ड ने स्पाइस इंडस्ट्री से चर्चा की और यह तय किया कि सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग भेजे जाने वाले मसालों में ETO की अनिवार्य रूप से जांच की जाएगी।'

बोर्ड के मुताबिक, 'सिंगापुर फूड एजेंसी के मुताबिक, मसालों में ETO की मैक्सिमम रेजिड्यू लिमिट 50ppm होनी चाहिए। हॉन्गकॉन्ग में ETO पूरी तरह से प्रतिबंधित है। लिहाजा रेडी टु ईट प्रोडक्ट्स सहित सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग भेजे जाने वाले सभी स्पाइस कंसाइनमेंट्स के साथ स्पाइसेज बोर्ड की ओर से जारी एनालिटिकल रिपोर्ट होनी चाहिए।' दुनिया के सबसे बड़े मसाला निर्यातक भारत के लिए यह मामला काफी संवेदनशील है। स्पाइसेज बोर्ड के मुताबिक, 2022-23 में भारत से 3.95 बिलियन डॉलर का मसाला निर्यात हुआ था। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनीशिएटिव ने एक रिपोर्ट में कहा है कि इस विवाद के चलते भारत के आधे मसाला निर्यात पर आंच आ सकती है।

एक्शन में सरकार

सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग में विवाद उठने के बाद कॉमर्स मिनिस्ट्री ने दोनों देशों के फूड सेफ्टी रेगुलेटरों से प्रतिबंध की वजहों की जानकारी मांगी थी, साथ ही वहां भारतीय दूतावासों से भी अपडेट्स तलब किए थे। इधर, इएएसएआई भी देश में मसालों के सैंपल जुटा रहा है। इससे पहले पिछले साल 23 मार्च को जारी सर्कुलर में बोर्ड ने यूरोपियन यूनियन को निर्यात होने वाले मसालों में ETO की अधिकतम मात्रा तय की थी। उसके मुताबिक, करी मसाला, करी पेस्ट और रेडी टु ईट प्रोडक्ट्स में ETO की अधिकतम मात्रा 0.1 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होनी चाहिए।

ये है मामला

सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग ने कथित तौर पर कीटनाशक ETO होने का हवाला देकर एमडीएच और एवरेस्ट के 4 मसाला प्रोडक्ट्स पर प्रतिबंध लगा दिया था। एवरेस्ट के फिश करी मसाला के अलावा एमडीएच के मद्रास करी पाउडर, सांभर मसाला पाउडर और करी पाउडर पर इन देशों के फूड सेफ्टी रेगुलेटरों ने सवाल उठाए थे। इंटरनैशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर के मुताबिक, ETO से कैंसर होने का खतरा होता है। एवरेस्ट और एमडीएच ने कहा था कि उनके उत्पादों की क्वॉलिटी बिल्कुल ठीक है।

मुकेश अंबानी के ग्रुप की वो कंपनियां जिनके नाम में नहीं है रिलायंस

नई दिल्ली। एजेंसी

रिलायंस इंडस्ट्रीज (RIL) मल्टीनेशनल ग्रुप है। इसकी कमान अरबपति मुकेश अंबानी के हाथों में है। रिलायंस इंडस्ट्रीज फॉर्च्यून 500 कंपनी है। यह देश की सबसे मूल्यवान कंपनी है। इसका मार्केट कैपिटलाइजेशन 19,34,581.62 करोड़ है। कंपनी एनर्जी, पेट्रोकेमिकल्स, प्राकृतिक गैस, खुदरा, मनोरंजन, दूरसंचार, मास मीडिया और टेक्सटाइल सहित तमाम इंडस्ट्रीज में काम करती है। हालांकि, रिलायंस इंडस्ट्रीज की कई प्रमुख लिस्टेड कंपनियों से लोग अनजान हैं। दरअसल, इनके नाम में रिलायंस नहीं लगा है। इनमें से कुछ के बारे में हम यहां बता रहे हैं।

1. आलोक इंडस्ट्रीज

रिलायंस ग्रुप की कंपनी आलोक इंडस्ट्रीज कपड़ा बनाती है। इसका मुख्यालय मुंबई में है। आलोक इंडस्ट्रीज एसएंडपी बीएसई 500 इंडेक्स का हिस्सा है। इसका बाजार पूंजीकरण 13,316.77 करोड़ है। 3 मई को बीएसई पर आलोक इंडस्ट्रीज का शेयर 27 रुपये पर बंद हुआ। पिछले एक साल में इसके शेयरों ने 104.80 फीसदी का शानदार रिटर्न दिया है।

2. डेन नेटवर्क्स

डेन नेटवर्क्स लिमिटेड केबल टीवी और इंटरनेट सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनी है। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने 2018 में हैथवे के साथ मिलकर इसका अधिग्रहण किया था। यह एसएंडपी बीएसई स्मॉल कैप इंडेक्स का हिस्सा है।

3. लोटस चॉकलेट

लोटस चॉकलेट कंपनी अपने कोको और चॉकलेट उत्पादों के लिए मशहूर है। कंपनी को रिलायंस कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (RCPL) का समर्थन प्राप्त है, जो रिलायंस रिटेल वेंचर्स की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है। लोटस चॉकलेट छोटी कंपनी है जिसका बाजार पूंजीकरण 515.89 करोड़ रुपये है।

4. जस्टडायल

जस्टडायल एक इंटरनेट प्रौद्योगिकी कंपनी है जो फोन, ऑनलाइन और मोबाइल एप्लिकेशन के जरिये देश में अलग-अलग कैटेगरी के लिए लोकल सर्च सेवाओं की पेशकश करती है। साल 2021 में रिलायंस रिटेल ने जस्टडायल में 3,497 करोड़ रुपये में 66.95 फीसदी हिस्सेदारी खरीदी। यह कंपनी एसएंडपी बीएसई 500 इंडेक्स का हिस्सा है।

5. नेटवर्क18 मीडिया एंड इन्वेस्टमेंट्स

नेटवर्क18 मीडिया एंड इन्वेस्टमेंट्स एक मीडिया समूह है। इसका स्वामित्व एनर्जी सेक्टर की दिग्गज कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज के पास है। कंपनी एसएंडपी बीएसई 500 इंडेक्स में शामिल है। कंपनी के शेयरों ने पिछले तीन सालों में निवेशकों का पैसा 111% बढ़ा दिया है।

6. हैथवे केबल एंड डाटाकॉम

हैथवे केबल एंड डाटाकॉम लिमिटेड मुंबई में स्थित है। यह केबल टेलीविजन और इंटरनेट सेवाएं प्रदान करती है। बीएसई के आंकड़ों के अनुसार, ब्रॉडबैंड सेवा प्रदाता कंपनी में रिलायंस इंडस्ट्रीज की 75% हिस्सेदारी है। कंपनी एसएंडपी बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स का हिस्सा है।

50 प्रतिशत विदेशी उड़ानों पर भारतीय एयरलाइन कंपनियों का होगा कब्जा, जानिए किसने किया यह दावा

नई दिल्ली। एजेंसी

भारतीय एयरलाइन कंपनियां वित्त वर्ष 2027-28 तक देश के अंतरराष्ट्रीय हवाई यातायात की 50 प्रतिशत जरूरत को पूरा करने में सक्षम होंगी। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी क्रिसिल ने सोमवार को यह अनुमान लगाया है। एजेंसी के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय यात्री यातायात में भारतीय एयरलाइन कंपनियों की हिस्सेदारी (जिसमें देश से होकर गुजरने वाला यातायात भी शामिल है) 2027-28 तक 50 प्रतिशत हो जाएगी, जो पिछले वित्त वर्ष में 43 प्रतिशत थी। क्रिसिल रेटिंग्स ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि यह सुधार भारतीय एयरलाइन द्वारा अतिरिक्त विमानों की तैनाती और अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में नए मार्ग जोड़ने के साथ-साथ विदेशी एयरलाइन की तुलना में बेहतर घरेलू संपर्क के बल पर होगा। रिपोर्ट में कहा गया कि अंतरराष्ट्रीय यातायात में उनकी बढ़ती हिस्सेदारी से चलते भारतीय एयरलाइन कंपनियों की व्यावसायिक स्थिति मजबूत होगी, जो घरेलू क्षेत्र की तुलना में अधिक लाभदायक है।

क्रिसिल के अनुसार, भारत का अंतरराष्ट्रीय यात्री यातायात वित्त वर्ष 2023-24 में करीब सात करोड़ तक बढ़ गया।

यह वैश्विक महामारी से पहले के स्तर को पार कर गया है। वैश्विक महामारी से प्रभावित वित्त वर्ष 2020-21 में यह एक करोड़ के निचले स्तर पर आ गया था। इसमें कहा गया, भारतीय एयरलाइन की हिस्सेदारी वैश्विक महामारी के बाद से तेजी से बढ़ी है। क्रिसिल रेटिंग्स के वरिष्ठ निदेशक मनीष गुप्ता ने कहा, 'वैश्विक महामारी के बाद खर्च करने के तरीकों में काफी बदलाव आया है, जो कि भारतीयों के अवकाश के लिए विदेश जाने की इच्छाओं से स्पष्ट है।' उन्होंने कहा, 'बढ़ती खर्च योग्य आय, आसान वीजा पहुंच, हवाई अड्डों की बढ़ती संख्या और बेहतर हवाई यात्रा संपर्क से अंतरराष्ट्रीय यात्रा को बढ़ावा मिल रहा है।'

नए रूट

भारत को पर्यटन का केंद्र बनाने पर सरकार के ध्यान देने से भी हवाई यातायात को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय एयरलाइन ने पिछले 15 महीनों में 55 नए अंतरराष्ट्रीय मार्ग जोड़े हैं, जिससे उनकी संख्या 300 से अधिक हो गई है। क्रिसिल के मुताबिक, इनमें अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया के लोकप्रिय लंबी दूरी के डेस्टिनेशंस के लिए सीधी उड़ानें शामिल हैं। इससे उड़ान का समय प्रभावी रूप से कम हुआ और किसी अन्य देश में रुकने की आवश्यकता भी खत्म हुई है।

निचले स्तर से रिकवरी के बाद सपाट बंद हुआ बाजार
सेंसेक्स 45 अंक गिरकर 73466 पर बंद

मुंबई। एजेंसी

बुधवार को शुरुआती गिरावट के बाद बाजार में निचले स्तर से अच्छी रिकवरी देखने को मिली है। सेंसेक्स आज 45 अंक गिरकर 73,466 पर बंद हुआ हैं। निफ्टी बिना बदलाव के 22,305 पर बंद हुआ। आज कंज्यूमर गुड्स, तेल-गैस, मेटल शेयरों में तेजी रही। पावर और ऑटो शेयरों में भी खरीदारी रही। मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में रिकवरी रही। बैंकिंग और रियल्टी शेयरों में मुनाफावसूली रही। निफ्टी PSE इंडेक्स करीब 1 फीसदी चढ़ा।

सुबह की गिरावट के बाद भारतीय बाजारों में अच्छी रिकवरी देखने को मिली। इसके बावजूद सेंसेक्स-निफ्टी सपाट बंद हुए हैं। कारोबार के अंत में सेंसेक्स 0.06% (45 अंक) फिसलकर 73,466.39 अंक पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी कल के 22,302.50 अंक पर बरकरार रहा। बीएसई पर 2133 शेयरों में तेजी आई, 1661 शेयरों में गिरावट आई और 132 शेयरों में कोई बदलाव नहीं हुआ। निफ्टी ऑयल एंड गैस में 1.7% की बढ़ोतरी हुई, इसके बाद निफ्टी मेटल और ऑटो में 1.48% की बढ़ोतरी हुई। हालांकि, निफ्टी प्राइवेट बैंक में 0.8% की सबसे बड़ी गिरावट देखने को मिली।

भारत को नहीं चाहिए चीन की फूटी कौड़ी! निवेश के नाम पर ड्रैगन के किस खेल पर लगेगा फुलस्टॉप?

नई दिल्ली। एजेंसी

भारत ने साफ संकेत दिया है कि उसे निवेश के नाम पर चीन की फूटी कौड़ी नहीं चाहिए। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इस बारे में बड़ी बात कही है। उन्होंने इस बात पर बल दिया है कि भारत आर्थिक उदारीकरण की दिशा में अपनी राष्ट्रीय और आर्थिक सुरक्षा को खतरे में नहीं डाल सकता। भारत का चीन के निवेश से मुंह फेरने का आखिर क्या कारण है? आइए, यहां समझते हैं।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि आज हर देश को राष्ट्रीय सुरक्षा के अनुरूप संवेदनशील क्षेत्रों का प्रबंधन करने का अधिकार है। उन्होंने खुली अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौते से इनकार किया। खासकर तब जब क्षेत्रीय दावे करने वाले देश (चीन) के साथ व्यवहार करना हो। उन्होंने कहा है कि हमारी आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों दांव पर हैं। जयशंकर ने भारतीय उत्पादकों, खासकर लघु एवं मध्यम आकार के उद्यमों (एसएमई) के साथ कार्यबल और कामकाजी वर्ग की चिंताओं की रक्षा के महत्व पर बल दिया।

किस तरह की हैं चिंताएं?

भारत को चीन के निवेश को लेकर कई तरह चिंताएं हैं। सबसे पहली चिंता सुरक्षा खतरे की है।

चीन के निवेश का इस्तेमाल रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को कमजोर करने के लिए किया जा सकता है। मसलन, चीन ने भारत के बंदरगाहों, टेलीकॉम और बिजली ग्रिड जैसी महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे में निवेश किया है। कुछ लोगों का मानना है कि इसका इस्तेमाल चीन भारत की जासूसी या महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को बाधित करने के लिए कर सकता है। दूसरा आर्थिक खतरा है। भारत को यह भी चिंता है कि चीन के निवेश से भारतीय कंपनियों के लिए अनुचित प्रतिस्पर्धा पैदा हो सकती है। चीन की कंपनियां अक्सर सरकारी सब्सिडी और कम कर्ज दरों का लाभ उठाती हैं। इससे उन्हें भारतीय बाजार में कम कीमत पर उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करने में मदद मिलती है। इससे भारतीय कंपनियों के लिए मुनाफा कमाना और जीवित रहना मुश्किल हो सकता है।

नौकरियों और राजनीतिक व्यवस्था को भी टेंशन

कुछ एक्सपर्ट मानते हैं कि चीन के निवेश से भारत में नौकरियों को नुकसान हो सकता है। चीन की कंपनियां अक्सर कम वेतन वाले श्रमिकों को नियुक्त करती हैं। इससे भारतीय श्रमिकों के लिए रोजगार ढूंढना मुश्किल हो जाता है। चौथी चिंता टेक्नोलॉजी ट्रांसफर को लेकर है। चीन के निवेश से महत्वपूर्ण तकनीक चीन में ट्रांसफर हो सकती है। इससे भारत को तकनीकी रूप से चीन पर निर्भर बनाया जा सकता है। इससे उसकी सौदेबाजी की शक्ति कमजोर हो सकती है। चीन के निवेश का इस्तेमाल भारत की राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने के लिए किया जा सकता है। चीन की कंपनियां भारतीय मीडिया और राजनीतिक दलों को दान दे सकती हैं। इससे उनकी नीतियां प्रभावित हो सकती हैं।

फर्राटा भर रहा है सर्विस सेक्टर, अप्रैल में पहुंचा 14 साल के हाई पर पहुंची ग्रोथ

नई दिल्ली। एजेंसी

देश में सर्विस सेक्टर की ग्रोथ बढ़ रही है और हालिया आंकड़ों में ये 14 साल के ऊंचे स्तर पर आ गई है। सर्विस सेक्टर की एक्टिविटी आर्थिक परिस्थितियों और मजबूत डिमांड के दम पर अप्रैल में 14 साल के हाई लेवल पर पहुंच गई। एक मासिक सर्वेक्षण में यह जानकारी सामने आई है। एचएसबीसी इंडिया भारत सेवा पीएमआई कारोबारी गतिविधि इंडेक्स मार्च में 61.2 थी जो अप्रैल में गिरकर 60.8 हो गई। इस तरह इसमें मामूली कटौती तो रही, लेकिन ये 14 साल के ऊंचे लेवल पर है। एचएसबीसी के मुख्य अर्थशास्त्री (भारत) प्रांजुल भंडारी ने कहा कि अप्रैल में भारत की सेवा एक्टिविटी में थोड़ी धीमी गति से वृद्धि हुई, जिसे घरेलू मांग में मजबूती के साथ नए कॉन्ट्रेक्ट्स और वृद्धि का समर्थन मिला। घरेलू मांग में तेजी के अलावा, कंपनियों ने दुनिया के कई हिस्सों से नए कारोबारी लाभ का भी उल्लेख किया है। इस बीच, एचएसबीसी इंडिया कंपोजिट पीएमआई आउटपुट इंडेक्स अप्रैल में 61.5 रहा जो मार्च में 61.8 था। यह 14 वर्षों में दूसरे सबसे मजबूत उछाल को दिखाता है। प्रांजुल भंडारी ने कहा कि कुल मिलाकर सारी बिजनेस एक्टिविटी के बारे में देखा जाए तो मैन्यूफैक्चरिंग और सर्विस दोनों सेक्टर्स में कुल उत्पादन अप्रैल में उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। हालांकि इसकी स्पीड थोड़ी धीमी गति पर रही लेकिन ये लगातार इन सेक्टर्स में बेहतरी का संकेत देता आ रहा है। पीएमआई की भाषा में 50 से ऊपर अंक का मतलब गतिविधियों में विस्तार से और 50 से कम अंक का आशय संकुचन से होता है।

पी-नोट्स से निवेश भी छह साल के हाई पर

भारतीय कैपिटल मार्केट में पार्टिसिपेटरी नोट्स (पी-नोट्स) के जरिये निवेश फरवरी के अंत में 1.5 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। यह पिछले छह साल का हाई लेवल है। सेबी के साथ रजिस्टर्ड इंडस्ट्री उन विदेशी निवेशकों को पी-नोट्स जारी करते हैं जो अपना रजिस्ट्रेशन कराए बगैर भारतीय शेयर बाजार का हिस्सा बनना चाहते हैं।

कम होंगी अरहर दाल की कीमतें, सरकार के इस फैसले के बाद मिलेगी राहत

नई दिल्ली। एजेंसी

अरहर की दाल की बढ़ी कीमतों से लोगों को अब राहत मिलने वाली है। कारोबारियों के मुताबिक, अफ्रीका से अरहर की दाल की सप्लाई शुरू हो गई है। इस वजह से थोक मंडी में इसकी कीमत में 4 से 5 रुपये की गिरावट आई है। साथ ही चना दाल के भी दाम कम होने के आसार हैं। बीते कुछ महीनों से अरहर दाल की कीमत तेजी से बढ़ रही थी। थोक मंडी में इसकी कीमत 170 रुपये किलोग्राम तक पहुंच गई थी। दाल कारोबारी गौरव ने बताया कि अरहर दाल की कीमत में हो रही बढ़ोतरी के पीछे का कारण सप्लाई का कम होना है। अफ्रीका से सप्लाई आ नहीं रही थी, लेकिन अब सप्लाई शुरू हो गई है। जिसके बाद थोक मंडी में अरहर की दाल की कीमतों में प्रतिकिलो 4 से 5 रुपये की गिरावट आई है। इसके अलवा चने की दाल पर लगने वाली इंपोर्ट ड्यूटी को सरकार ने हटाने का फैसला लिया है। जिससे आने वाले दिनों में चने की दाल की कीमत में भी गिरावट आएगी। इस बीच केंद्र सरकार भी दालों की महंगाई से राहत दिलाने के लिए सक्रिय हो गई है। बिजनस स्टैंडर्ड की एक रिपोर्ट के मुताबिक सरकार ने दालों के स्टॉक पर सख्त निगरानी रखने की कवायद शुरू कर दी है। अधिकारियों को मंडियों में दालों के स्टॉक की जानकारी लेने और जांच करने के लिए भेजा गया है। इस बात की जांच की जा रही है कि कहीं जमाखोरी के कारण दालों के दाम तो नहीं बढ़ रहे हैं। उपभोक्ता मामलों के विभाग ने दाल के स्टॉक की स्थिति और भाव का पता लगाने के लिए पिछले हफ्ते अधिकारियों की दो टीमों को महाराष्ट्र भेजने का फैसला किया था।

दालों की रिटेल प्राइस

देश में खासकर अरहर और उड़द के भाव में काफी तेजी देखी जा रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार पिछले साल की तुलना में दालों का रिटेल प्राइस 35 रुपये किलो तक ज्यादा हैं। सालभर में अरहर की औसत खुदरा कीमत करीब 35 रुपये बढ़कर 152 रुपये, उड़द की 15 रुपये बढ़कर 124 रुपये, मूंग दाल की 9 रुपये बढ़कर 117 रुपये और चना दाल की 10 रुपये बढ़कर 84 रुपये किलो हो गई है।

दुनिया के इन देशों के पास है सोने के बड़े भंडार, जानिए भारत के पास कितना है गोल्ड

नई दिल्ली। एजेंसी

सोने की कीमतें रेकॉर्ड हाई पर हैं। हालांकि पिछले कुछ समय में सोने-चांदे के भाव कम हुए हैं। लेकिन अभी भी भारत में सोना 71 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के करीब बना हुआ है। देश में ज्यादातर लोग सोना खरीदना पसंद करते हैं। त्योहारों और शादियों के सीजन में देश में जमकर सोना खरीदा जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं दुनिया में सबसे ज्यादा सोना (उर्दूीन) किस देश के पास है। दरअसल सोने को किसी भी देश की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में अहम माना जाता है। दुनिया के बहुत से देशों ने सोने के विशाल भंडार जमा कर रखे हैं। ऐसा इसलिए है कि अगर कभी आर्थिक संकट आ जाए तो इस सोने का इस्तेमाल किया जा सके। सोने के पैमाने यानी गोल्ड स्टैंडर्ड को 18वीं शताब्दी के अंत में अपनाया गया था। वहीं 19 वीं शताब्दी में यह गोल्ड स्टैंडर्ड दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं का अहम हिस्सा बन गया। गोल्ड स्टैंडर्ड को 1970 के दशक में आधिकारिक तौर पर छोड़ दिया गया, लेकिन इसके बाद भी देशों ने अपने सोने के भंडार को बनाए रखा। अब दुनियाभर की अर्थव्यवस्था में तेजी से बढ़ रही अनिश्चितता को देखते हुए गोल्ड रिजर्व की मांग तेजी से बढ़ रही है। आईए आपको बताते हैं कि सबसे ज्यादा सोना किस देश के पास है।

किसके पास है सबसे ज्यादा सोना

दुनिया में सबसे ज्यादा सोने की बात करें तो अमेरिका इसमें सबसे ऊपर है। इस मामले में दुनिया का कोई भी देश इसके आसपास भी नहीं है। अमेरिका के खजाने में 8133 टन सोना जमा है। इसके बाद दूसरे नंबर पर यूरोपीय देश जर्मनी है। जर्मनी के केंद्रीय बैंक के खजाने में 3367 टन गोल्ड भरा हुआ है। लेकिन देखें तो अमेरिका की तुलना में ये काफी कम है। जर्मनी के बाद तीसरे नंबर पर इटली है। इटली के पास 2452 टन सोने का भंडार है। फ्रांस के पास 2436.06 टन, रूस के पास 2333 टन, चीन के पास 2192 टन, स्विट्जरलैंड के पास 1040 टन सोन है। इसके बाद जापान का स्थान है। जापान के पास 847 टन गोल्ड रिजर्व है।

भारत के पास कितना गोल्ड

सोना खरीदने में भारत और चीन हमेशा सबसे आगे रहते हैं। सोने की सबसे ज्यादा खपत पूरी दुनिया में चीन में होती है। इसके बाद भारत का नंबर आता है। गोल्ड रिजर्व के मामले में भारत दुनिया के टॉप 10 देशों में शामिल है। भारत के पास 801 टन गोल्ड रिजर्व है दुनिया में भारत का 9वां नंबर है। वहीं भारत में आम लोगों के पास करीब 25 हजार टन सोना है। यह दुनिया में सबसे ज्यादा है। गोल्ड रिजर्व के मामले में भारत के बाद नीदरलैंड, तुर्की, ताइवान, पुर्तगाल और उजबेकिस्तान आदि का नंबर आता है।

3 राशि वालों के लिए वरदान है त्रिग्रही योग, करियर में मिलेगा लाभ

हिंदू ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के राशि परिवर्तन के आधार पर ही किसी जातक के भविष्य का निर्धारण किया जाता है। ज्योतिष मान्यता है कि हर राशि में मौजूद ग्रहों की स्थिति लगातार बदलती रहती है और इसका असर जातक के भविष्य पर भी होता है। मई माह की बात की जाए तो इस पूरे माह में 3 प्रमुख ग्रहों का राशि परिवर्तन होगा। 1 मई को बृहस्पति देव का वृषभ राशि में प्रवेश हो चुका है और अब इसके बाद 10 मई को बुध गोचर होगा और 14 मई को सूर्य गोचर होगा। इन ग्रहों के राशि परिवर्तन के कारण मई माह में त्रिग्रही योग बन रहा है, जिसका परिणाम 3 राशि वालों पर अच्छा होगा। पंडित प्रभु दयाल दीक्षित के मुताबिक, त्रिग्रही योग के कारण 3 राशि वालों को करियर में अच्छी सफलता मिल सकती है।

पं. राजेश वैष्णव
शनि उपासक ज्योतिष रत्न एवं वास्तु विशेषज्ञ
98272 88490

मेष राशि

त्रिग्रही योग के कारण मई माह में मेष राशि वालों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय के नए स्त्रोत मिल सकते हैं। कारोबारियों का विस्तार होगा। करियर के लिए यह समय अच्छा है। ऑफिस में आपका प्रमोशन हो सकता है। इसके अलावा निवेश में भी फायदा हो सकता है।

वृषभ राशि

त्रिग्रही योग के चलते आपके रुके हुए कार्य अचानक पूरे हो सकते हैं। आय के नए स्त्रोत बन सकते हैं। कानूनी मामलों में जीत के कारण आपको अच्छी कमाई हो सकती है। मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी के दौरान आपका तबादला हो सकता है लेकिन प्रमोशन मिलने का कारण आपको अच्छी आय होगी।

मिथुन राशि

त्रिग्रही योग मिथुन राशि वालों का बैंक बैलेंस बढ़ा सकता है। आपको शेयर बाजार में अच्छा लाभ हो सकता है। अंगारक योग के कारण भी मिथुन राशि वालों को करियर में सफलता मिलेगी। सोच समझकर फैसला लेंगे तो आय में तेजी से बढ़ोतरी हो सकती है।

क्यों मनाई जाती है अक्षय तृतीया

जानिए सतयुग-त्रेतायुग से लेकर भगवान विष्णु और परशुराम तक जुड़ी मान्यताएं

डॉ. संतोष वाधवानी
रत्न एवं वास्तु विशेषज्ञ, अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष एवं वास्तु एसोसिएशन प्रदेश प्रवक्ता

वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता है। अक्षय तृतीया में कई तरह की नई चीजें खरीदी जाती है और दान-पुण्य के कार्य किए जाते हैं। अक्षय तृतीया पर खासतौर पर सोने की खरीदारी की जाती है। इस साल अक्षय तृतीया का त्योहार 10 मई शुक्रवार को मनाया जाने वाला है। अक्षय तृतीया पर माता लक्ष्मी और कुबेर देव की पूजा की जाती है। इस दिन सूर्य और चंद्रमा दोनों अपनी उच्च राशि में स्थित होते हैं।

अक्षय तृतीया मुहूर्त

वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि 10 मई 2024 को प्रातः 4:17 बजे प्रारंभ होगी। वहीं, यह तिथि 11 मई को 02:50 बजे समाप्त होगी। ऐसे में अक्षय तृतीया का त्योहार 10 मई, शुक्रवार को मनाया जाएगा। इस दिन पूजा का शुभ समय सुबह 5.33 बजे से दोपहर 12.18 बजे तक रहेगा।

क्यों मनाई जाती है अक्षय तृतीया?

अक्षय तृतीया को कई कारणों से साल का सबसे शुभ दिन माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, अक्षय तृतीया से ही सतयुग और त्रेतायुग का आरंभ हुआ था। इसी दिन भगवान विष्णु ने नर नारायण का अवतार भी लिया था। भगवान परशुराम का जन्म भी अक्षय तृतीया को ही हुआ था। इसी शुभ तिथि से भगवान गणेश ने महाभारत काव्य लिखना प्रारंभ किया था।

इतना ही नहीं, बद्रीनाथ के कपाट केवल अक्षय तृतीया से ही खुलते हैं और केवल इसी दिन ही वृन्दावन में भगवान बांके बिहारी जी के चरणों के दर्शन होते हैं। कहा जाता है कि इसी दिन मां गंगा भगवान विष्णु के चरणों से धरती पर अवतरित हुई थीं। वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि को अक्षय तृतीया या आखा तीज के रूप में भी जाना जाता है। इसे अक्षय तीज भी कहते हैं।

भूलकर भी न खरीदें ये चीजें, वरना दुर्भाग्य से हो सकता है सामना

श्रीमती नीतू मित्तल
8959760040
ज्योतिषाचार्य, इंदौर (म.प्र.)

अक्षय तृतीया का दिन बेहद शुभ माना जाता है। इसे दीपावली की तरह ही बहुत कल्याणकारी माना जाता है। यह दिन माता लक्ष्मी और भगवान श्री हरि विष्णु की पूजा के लिए समर्पित है। इस बार यह पर्व 10 मई, 2024 को मनाया जाएगा। ऐसा कहा जाता है कि जो लोग सच्चे भाव के साथ इस तिथि पर धन की स्वामिनी की आराधना करते हैं उनके धन और सौभाग्य में वृद्धि होती है, तो आइए इस दिन से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातों को जानते हैं -

तृतीया तिथि 10 मई, शुक्रवार को प्रातः 4 बजकर 17 मिनट पर शुरू होगी और वहीं, इसका समापन अगले दिन 11 मई सुबह 2 बजकर 50 मिनट पर होगा। इसके अलावा अक्षय तृतीया का शुभ मुहूर्त 10 मई सुबह 5 बजकर 49 मिनट से दोपहर 12 बजकर 23 मिनट तक रहेगा। ऐसा माना जाता है कि इस दौरान किए जाने वाले सभी कार्य में सफलता मिलती है। साथ ही धन में वृद्धि होती है।

अक्षय तृतीया के दिन क्या नहीं खरीदना चाहिए?

ऐसा कहा जाता है कि अक्षय तृतीया के दिन प्लास्टिक की चीजें, स्टील एल्युमिनियम के बर्तन, काले कपड़े, काटेंदार वस्तुएं, कालें रंग की वस्तुएं, भूलकर भी नहीं खरीदना चाहिए। कहा जाता है कि अक्षय तृतीया के दिन ये चीजें खरीदने से घर में दरिद्रता आती है। साथ ही घर में ग्रह और वास्तु दोष बना रहता है।

क्या आपकी कुंडली में भी है कुबेर योग, व्यक्ति बन जाता है अकूत संपत्ति का स्वामी

डॉ. आर.डी. आचार्य
9009369396
ज्योतिष एवं वास्तु विशेषज्ञ
इंदौर (म.प्र.)

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में किसी व्यक्ति की कुंडली का विशेष महत्व होता है। जब जातक का जन्म होता है तभी उसके संपूर्ण जीवन का खाका कुंडली में अंकित हो जाता है। जातक के जन्म के समय ग्रह-नक्षत्रों के संयोग से कुंडली में कई तरह के राजयोगो का निर्माण होता है। जन्म के समय अगर जातक की कुंडली में राजयोग का निर्माण हुआ होता है तो व्यक्ति जीवनभर सुखी रहते हुए सभी तरह के सुख-साधनों का भोग करता है। ग्रहों के शुभ स्थान पर विराजमान होने पर व्यक्ति को अपने जीवन में हर एक तरह की सुख-सुविधा का आनंद प्राप्त करता है। व्यक्ति को समाज में मान-सम्मान, धन-दौलत और जीवन में अच्छा मुकाम हासिल करता है। वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार व्यक्ति की कुंडली में कई तरह के राजयोग बनते हैं, जिसमें कुबेर योग का काफी प्रभाव रहता है। जिन जातकों की कुंडली में कुबेर योग बनता है, ऐसे व्यक्तियों के जीवन में धन-दौलत, सुख-साधन, संपन्नता और भौतिक भोग विलास की कोई कमी नहीं रहती है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में अकूत धन संपत्ति का मालिक बनता है। आइए जानते हैं कुंडली में कैसे बनता है कुबेर योग।

कुंडली में कैसे बनता है कुबेर योग

वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किसी जातक की कुंडली में कुबेर योग का तब बनता है जब कुंडली के दूसरे और ग्यारहवें भाव के स्वामी अपनी खुद की राशि या फिर उच्च राशि में विराजमान हो। इसके अलावा दूसरे और ग्यारहवें भाव के स्वामी की बीच राशि परिवर्तन या फिर युति बने तो कुबेर योग बनता है।

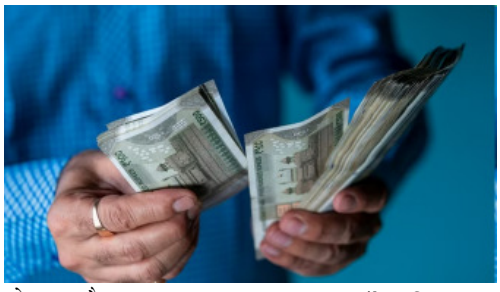

कुबेर योग बनने से व्यक्ति बनता है अकूत संपत्ति का स्वामी

जिन जातकों की कुंडली में कुबेर योग बनता है वह अपने पराक्रम, मेहतन और भाग्य के बल पर बहुत सारा धन एकत्रित करता है। ऐसा व्यक्ति अलग-अलग स्त्रोतों से धन कमाने में कामयाब होता है। इस योग के बनने से व्यक्ति को भौतिक सुख-साधनों में कोई कमी नहीं होती। इस तरह के लोग जीवन में लग्जरी जीवन जीना पसंद करते हैं।

कम उम्र में व्यक्ति बन जाता है अमीर

जिन जातकों की कुंडली में कुबेर योग बनता है वे बहुत ही मेहनती और धुन के पक्के होते हैं। अगर किसी काम को करने की ठान लेते हैं तो उसे जरूर पूरा करते हैं। ऐसे लोग कम उम्र में धन-दौलत के मालिक बन जाते हैं। ये लोग व्यापार करने में सबसे आगे होते हैं और पैसे से पैसे बनने का हुनर जानते हैं। इस तरह के लोग शान-शौकत में अपना पूरा जीवन व्यातीत करते हैं।

गुरु और शुक्र की युति से इन राशि वालों को मिलेगा भाग्य का साथ, ऐशोआराम में होगी वृद्धि

ज्योतिष में ग्रहों का विशेष महत्व होता है। ग्रहों की चाल से जातकों के जीवन में उतार-चढ़ाव बना रहता है। ग्रह समय-समय पर एक से दूसरी राशि में गोचर करते हैं। ग्रहों के गोचर से कई बार दूसरे ग्रहों के साथ युति बन जाती है, जिसका प्रभाव सभी राशियों के ऊपर देखने को मिलता है। ऐसी ही दो ग्रहों की युति कुछ दिनों में बनने वाली है, दरअसल आपको बता दें कि देवताओं के गुरु बृहस्पति 01 मई से वृषभ राशि में गोचर हैं और अब 19 मई को सुख, धन, वैभव और सौंदर्य के दाता ग्रह शुक्र भी वृषभ राशि में गोचर करने वाले हैं। इस तरह से दोनों महत्वपूर्ण ग्रहों की युति वृषभ राशि में होने वाली है।

मेष राशि - मेष राशि के जातकों के लिए गुरु-शुक्र की युति बहुत ही फायदेमंद सिद्ध हो सकता है। यह युति आपकी राशि से दूसरे भाव यानी धन के स्थान पर होगा। ऐसे में आपको अचानक धन लाभ और सुख में वृद्धि के योग बन रहे हैं। व्यापार में आपको अच्छा खासा मुनाफा हो सकता है। आपको कई अवसरों की प्राप्ति होगी। रुका हुआ धन मिल सकता है जिससे आपको कुछ राहत मिलेगी।

वृषभ राशि - गुरु और शुक्र की युति आपके ही राशि में बनने जा रही है। ऐसे में यह संयोग बहुत ही शुभ साबित होगा। जीवन में खुशियां के बेहतरीन अवसर मिलेंगे। जो लोग कई दिनों से किसी बिजनेस प्लान पर काम रहे थे अब उसके पूरे होने का समय आ चुका है। नौकरी में अवसरों की प्राप्ति होगी। वैवाहिक जीवन खुशहाल रहेगा। जीवन साथी का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह राशि- सिंह राशि के जातकों के लिए गुरु और शुक्र का संयोग आपकी कुंडली के कर्म भाव यानी 10वें स्थान पर बनेगा। ऐसे में सिंह राशि के जातकों के लिए बहुत ही फलदायी रहने वाला होगा। नौकरी और कारोबार में वृद्धि के योग बन रहे हैं। आपको नए-नए अवसरों की प्राप्ति होगी। कानूनी वाद-विवाद में आपको सफलताएं मिलेगी।

अरहर 30%, उड़द 15%... दालों की उछलती कीमतों ने क्यों बढ़ाई टेंशन?

खेत से मार्केट तक पूरा गणित समझिए

नई दिल्ली। एजेंसी

दाल की बढ़ती कीमतों ने सरकार की टेंशन बढ़ा दी है। सरकार को चिंता है कि कुछ लोग दालों की कीमतों में हेराफेरी कर रहे हैं। अरहर (तुअर) दाल की कीमतों में एक साल में ही 31 फीसदी की भारी बढ़ोतरी हुई है। सिर्फ अरहर दाल ही नहीं, उड़द दाल की कीमतों में भी करीब 15 फीसदी का इजाफा हुआ है। मसूर दाल की कीमतों में भी बढ़ोतरी हुई है। सरकार को चिंता है कि बिचौलिए दाल की बोरियों का भंडारण कर रहे हैं। वे इसे गोदामों या दुकानों में जमा कर रहे हैं। सप्लाई सीमित कर रहे हैं। लाजिमी है कि आपूर्ति में कमी से कीमतें बढ़ेंगी। इससे महंगाई बढ़ेगी, जो अर्थव्यवस्था के लिए सही नहीं है। इसे आम होने से रोकने के लिए सरकार औचक जांच करने की तैयारी में है। वह व्यापारियों और खुदरा विक्रेताओं से नियमित रूप से अपने दाल के स्टॉक की जानकारी देने का अनुरोध भी कर सकती है। सवाल यह है कि क्या बढ़ती कीमतें केवल एक छोटे समूह की अनैतिक जमाखोरी के कारण हैं या इसके पीछे कोई अन्य वजह भी है।

दालों का उत्पादन उस अनुपात में नहीं बढ़ा

भारत में दालों का बहुत ज्यादा प्रचलन है। खासतौर पर तुअर यानी अरहर दाल का। यह ग्रामीण और शहरी दोनों ही घरों में सबसे ज्यादा खाई जाने वाली दाल है। लेकिन, समस्या यह है कि हम अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त मात्रा में उत्पादन नहीं कर पाते हैं। इसके अलावा यह कोई हाल की बात नहीं है। किसान लंबे समय से दालों के बजाय चावल और गेहूं को प्राथमिकता देते रहे हैं। यह कई दशकों से होता आ रहा है। उदाहरण के लिए 1951 से 2008 तक दालों का उत्पादन केवल 45 फीसदी बढ़ा। इसके उलट गेहूं के उत्पादन में 1951 से 2008 के दौरान 320 फीसदी की बढ़ोतरी हुई।

किसान बड़ी मात्रा में दालों की खेती करने में रुचि नहीं रखते थे। इसका एक कारण दोनों फसलों के बीच पैदावार में अंतर भी है। दालों से प्रति हेक्टेयर 800 किलोग्राम उत्पादन होता है। जबकि गेहूं से 3,000 किलोग्राम से अधिक उत्पादन होता है। केवल गेहूं ही लोकप्रिय नहीं हुआ। किसानों ने सोयाबीन की लाभकारी फसल की ओर भी रुख किया। जल्द ही उत्तर भारत के वे राज्य, जो परंपरागत रूप से दालें उगाते थे, कम लोकप्रिय होने लगे। नतीजा यह हुआ कि देश 1981 से दालों का आयात कर रहा है। हमारी वार्षिक मांग का लगभग 10 फीसदी तंजानिया, मोजाम्बिक और म्यांमार जैसे देशों से प्राप्त होता है।

मॉनसून पर बहुत कुछ निर्भर

अब एक ऐसी स्थिति की कल्पना करें जहां मौसम समस्याएं पैदा करता है। दालों की खेती आमतौर पर सिंचाई के जरिये नहीं की जाती। ऐसे में मानसून का समय पर आना और चले जाना जरूरी है। कोई भी वैरिएशन उपज को काफी हद तक प्रभावित कर सकता है। यही हाल में हुआ है। मौसम अप्रत्याशित रहा है। बीमारियों ने फसल उत्पादन को प्रभावित किया है। हम अपने लक्ष्यों से काफी पीछे हैं। दिसंबर 2023 में दालों का शुल्क-मुक्त आयात शुरू करना पड़ा है। शुरू में इस योजना को मार्च तक लागू करने का इरादा था। हालांकि, देश में दाल का उत्पादन अभी भी उम्मीदों के मुताबिक नहीं है। लिहाजा, सरकार ने इस योजना को जून तक बढ़ाने का फैसला किया। हम बड़ी मात्रा में आयात कर रहे हैं। सरकार ने कुछ वर्ष पहले शुल्क मुक्त आयात भी लागू किया था। कारण है कि हम मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त मात्रा में दालों का उत्पादन करने में असमर्थ थे। हालांकि, हमें सुविधा के आधार पर अपनी नीतियों में असंगत परिवर्तन नहीं करना चाहिए। सरकार को इस बात का अहसास है। साथ ही उसे यह भी पता है कि भविष्य में यह समस्या और भी गंभीर हो सकती है। भारत एक ऐसा देश है जहां पर्याप्त प्रोटीन की कमी है। दालें ज्यादातर लोगों के लिए प्रोटीन का स्रोत रही हैं। विशेषज्ञों का सुझाव है कि जैसे-जैसे भारत की संपत्ति और डिस्पोजेबल आय बढ़ेगी, लोग ज्यादा प्रोटीन का सेवन करने का लक्ष्य रखेंगे। इस उद्देश्य के लिए दालें प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत होंगी।

सरकार ने एमएसपी के जरिये की है मदद

ऐसे में किसानों के लिए दालों की खेती करना जरूरी है। वरना भविष्य में मांग-आपूर्ति में असंतुलन हो सकता है। किसानों के बीच अधिक दिलचस्पी पैदा करने के प्रयास में सरकार ने पिछले एक दशक में दालों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में बढ़ोतरी की है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) को एक न्यूनतम मूल्य माना जा सकता है जिस पर सरकार किसानों से फसल की एक निश्चित मात्रा खरीदने के लिए प्रतिबद्ध होती है।

यह सुनिश्चित करता है कि किसान कम बाजार कीमतों की अवधि के दौरान भी स्थिर आय की उम्मीद कर सकते हैं। वित्त वर्ष 2014 से वित्त वर्ष 2022 की अवधि के दौरान अरहर और उड़द जैसी दालों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में लगभग 47 फीसदी की बड़ी बढ़ोतरी हुई है। ऐसे में किसानों के हित को बनाए रखने के लिए एक और अहम बढ़ोतरी की जरूरत होगी। सरकार को उम्मीद है कि देश 2028 तक दालों के मामले में आत्मनिर्भरता हासिल कर लेगा। इसलिए ऐसा करने के लिए किसानों को थोड़ा और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

गिरते-गिरते ऑल-टाइम लो पर पहुंचा Paytm का शेयर, बर्बाद हो गए IPO पर पैसे लगाने वाले

नई दिल्ली। एजेंसी

देश की सबसे बड़ी डिजिटल पेमेंट कंपनी पेटीएम (Paytm) की मूल कंपनी वन 97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड (One 97 Communications Ltd) का शेयर आज ऑल-टाइम लो पर पहुंच गया। लगातार तीसरे दिन लोअर सर्किट छूने के साथ ही इसकी कीमत 317.45 रुपये रह गई। नोएडा की इस कंपनी के शेयरों ने सोमवार और मंगलवार को भी पांच फीसदी का लोअर सर्किट छुआ था। इस तरह कंपनी के आईपीओ में पैसा लगाने वाले निवेशकों को हरेक शेयर पर 1832.55 रुपये का नुकसान हो चुका है। इसके साथ ही कंपनी का मार्केट कैप 20,180.46 करोड़ रुपये रह गया है। कंपनी के अहम लेंडिंग पार्टनर्स में से एक आदित्य बिड़ला फाइनेंस ने बैंक गारंटी भुना ली है। पेटीएम ने ग्राहकों के रिपेमेंट डिफॉल्ट के बदले यह गारंटी दी थी। जानकारों का कहना है कि पीरामल फाइनेंस और क्लिक्स कैपिटल ने भी पेटीएम के साथ पार्टनरशिप से किनारा कर लिया है। हाल में आरबीआई ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक की सेवाओं पर रोक लगा दी थी। इसके बाद पेमेंट बैंक के एमडी और सीईओ सुरिंदर चावला ने रिजाइन कर दिया था। शनिवार को कंपनी ने लीडरशिप स्ट्रक्चर में बड़े फेरबदल की घोषणा की थी। कंपनी के वेल्थ मैनेजमेंट प्लेटफॉर्म पेटीएम मनी के सीईओ वरुण श्रीधर की जगह राकेश सिंह को दी जा रही है। राकेश सिंह PayU के निवेश वाली कंपनी Fisdom की ब्रोकिंग सर्विसेज के हेड रह चुके हैं। पेटीएम का 18,300 करोड़ रुपये का आईपीओ 2021 में आया था। इसका इश्यू प्राइस 2,150 रुपये था।

कितने का घाटा

पेटीएम का आईपीओ आठ नवंबर 2021 को सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। बड़ी संख्या में रिटेल इनवेस्टर्स ने हिस्सा लिया था। लेकिन यह शेयर कभी भी अपने इश्यू प्राइस के आसपास नहीं पहुंच सका। कंपनी का शेयर 9.30% डिस्काउंट के साथ लिस्ट हुआ और फिर 27% से अधिक गिरावट के साथ बंद हुआ। यानी लिस्टिंग पर दमदार कमाई की उम्मीद कर रहे निवेशकों को भारी निराशा हुई। लेकिन उसके बाद भी यह शेयर लगातार गिरता रहा। इसका 52 हफ्ते का उच्चतम स्तर 998.30 रुपये है। पिछले साल 20 अक्टूबर को यह इस स्तर पर पहुंचा था। आईपीओ में स्टॉक पाने वाले निवेशकों को हरेक शेयर पर 1,815.85 रुपये का घाटा हो चुका है।

मेक माई ट्रिप ने शेयर किया डेटा

देश में इन जगहों पर घूमना सबसे ज्यादा पसंद कर रहे लोग

नई दिल्ली। एजेंसी

गर्मियां शुरू होने के साथ अब बहुत से लोग घूमने-फिरने का प्लान बना रहे हैं। देश में गोवा सबसे ज्यादा सर्च किए जाने वाले पर्यटन स्थलों में शामिल है। वहीं पिछले साल की तुलना में इस साल मार्च से अप्रैल महीने के दौरान श्रीनगर और उदयपुर सबसे ज्यादा सर्च किए जाने वाले पर्यटन स्थल रहे हैं। ट्रैवल से जुड़ी सर्विस देने वाली कंपनी मेक माई ट्रिप की ओर से जारी किए गए डेटा में ये बात सामने आई है। डेटा में बताया गया है कि पुरी और वाराणसी सबसे ज्यादा सर्च किए जाने वाले धार्मिक स्थलों में शामिल हैं। वहीं अयोध्या के लिए यात्रा खोज में बंपर उछाल देखा गया है। पिछले साल की तुलना में इस बार ट्रैवल के लिए सबसे ज्यादा खोजे जाने वाली जगहों पर अयोध्या, लक्ष्यद्वीप, नंदी हिल्स, चालाकुडी, चेवेल्या, ओमकारेश्वर आदि शामिल रहे हैं।

यहां जाना पसंद कर रहे लोग

विदेशों की बात करें तो इस बार दुबई, बैंकॉक, सिंगापुर, बाली, काठमांडू, कुलालंपुर, टोरेंटो, फुकेट, दोहा, आबु धाबी, लंदन, कोलंबो, न्यूयार्क आदि जगहों पर घूमना पसंद कर रहे हैं। वहीं फैमिली के साथ ट्रैवल करने वालों की संख्या में इस बार पिछले वर्ष के मुकाबले 20 फीसदी का उछाल देखा गया है। वहीं सोलो ट्रैवल में बीते वर्ष के मुकाबले 10 फीसदी का इजाफा हुआ है। वहीं ट्रैवल के एवरेज ड्यूरेशन की बात करें तो डोमेस्टिक में 3 से 5 दिन और इंटरनेशनल में 5 से 8 दिन रहा है।

इन जगहों की खूब हुई बुकिंग

जिन जगहों के सबसे ज्यादा हॉलीडे पैकेज बुक किए गए उनमें अगर भारत की बात करें तो हिमाचल प्रदेश पहले नंबर पर है। इसके बाद कश्मीर, गोवा, केरला और नार्थ इंडिया शामिल हैं। वहीं विदेशों की बात करें तो इसमें थाईलैंड, दुबई, बाली, यूरोप और सिंगापुर शामिल हैं। कोरोना काल में लोगों ने घूमना-फिरना बंद कर दिया है। हालांकि अब कोरोना के बाद से घूमने-फिरने वालों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है।

सैमसंग की बेजोड़ ऑफर के साथ 'फैब ग्रैब फेस्ट' की वापसी

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

भारत के सबसे बड़े उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड, सैमसंग ने अपनी सबसे बड़े समर सेल 'फैब ग्रैब फेस्ट' की घोषणा की है। इस सेल में ऍस्स्हु.म्दस्, सैमसंग शॉप ऐप और सैमसंग के एक्सक्लूसिव स्टोर्स पर ग्राहक सैमसंग के प्रॉडक्ट्स को असाधारण डील्स और रोमांचक कैशबैक के साथ खरीद सकते हैं। 'फैब ग्रैब फेस्ट' के दौरान, ग्राहक गैलेक्सी एस सीरीज, गैलेक्सी जेड सीरीज और गैलेक्सी ए सीरीज के स्मार्टफोन के चुनिंदा मॉडलों पर 64% तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं। गैलेक्सी टैबलेट, एक्सेसरीज़ और वियरेबल्स के चुनिंदा मॉडल 77% तक की छूट पर उपलब्ध होंगे, वहीं गैलेक्सी बुक4 सीरीज के लैपटॉप के चुनिंदा मॉडलों की खरीद पर ग्राहक 24% तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं।

सैमसंग टीवी के चुनिंदा मॉडल जैसे फ्लैगशिप नियो-क्यूएलईडी 8के, नियो क्यूएलईडी, ओएलईडी, द फ्रेम टीवी और क्रिस्टल यूएचडी सीरीज 43% तक की छूट पर उपलब्ध होंगे। नियो क्यूएलईडी 8के, नियो क्यूएलईडी और ओएलईडी टीवी के चुनिंदा मॉडलों की खरीद पर ग्राहक 20,000 रुपये तक के बैंक कैशबैक का लाभ उठा सकते हैं। इसके अलावा, ग्राहक सभी टीवी की खरीद पर एक्सचेंज बोनस के रूप में 5000 रुपये तक का लाभ उठा सकते हैं।

'फैब ग्रैब फेस्ट' 2024 के तहत ग्राहक रेफ्रिजरेटर, वॉशिंग मशीन, माइक्रोवेव, मॉनिटर और एयर कंडीशनर जैसे कई डिजिटल उपकरणों पर छूट और बेजोड़ कीमतों का लाभ उठा सकते हैं। हमारे 'बाय मोर, सेव मोर' प्लेटफॉर्म के साथ, ग्राहक Samsung.com या सैमसंग शॉप एप के माध्यम से दो या दो से अधिक उत्पादों की

खरीद पर अतिरिक्त 5% की बचत कर पाएंगे। 'बाय मोर, सेव मोर' प्लेटफॉर्म उपभोक्ताओं को सैमसंग के कई प्रॉडक्ट्स पर बंडल ऑफर का लाभ उठाने का मौका देता है।

सैमसंग का 2024 में टीवी बिजनेस से 10,000 करोड़ रुपये की बिक्री का लक्ष्य

गुरुग्राम। आईपीटी नेटवर्क

भारत के सबसे बड़े कंज?यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने एआई टेलीविजन के अपने 2024 लाइनअप के लॉन्च के साथ भारत में अपने टेलीविजन कारोबार से 10,000 करोड़ रुपये की बिक्री हासिल करने का लक्ष्य तय किया है। विश्लेषकों के मुताबिक, भारत में अब तक किसी भी टेलीविजन ब्रांड ने यह उपलब्धि हासिल नहीं की है। सैमसंग इंडिया के विजुअल डिस्प्ले बिजनेस के सीनियर वाइस प्रेसीडेंट मोहनदीप सिंह ने कहा 'एआई-पावर्ड 8K नियो क्यूएलईडी, 4K नियो क्यूएलईडी और ओएलईडी टीवी की नई रेंज के लॉन्च के साथ, हमें इस साल भारत में अपने रेवेन्यू और मार्केट लीडरशिप को बढ़ाने का पूरी उम्मीद है। 2024 में, हमने भारत में अपने टीवी कारोबार से 10,000 करोड़ रुपये का रेवेन्यू हासिल करने का लक्ष्य तय किया है। हमारे नियो क्यूएलईडी 8K एआई टीवी जीवंत तस्वीरों और शानदार प्रीमियम ऑडियो के साथ दर्शकों को टीवी देखने का जबरदस्त अनुभव प्रदान करते हैं।' रिसर्च फर्म ओमडिया के आंकड़ों का हवाला देते हुए सैमसंग ने कहा है कि यह 2023 तक 21% बाजार हिस्सेदारी के साथ भारत का नंबर एक टेलीविजन ब्रांड रहा है। ओमडिया के आंकड़ों के अनुसार सैमसंग पिछले पांच साल से भारत में सबसे बड़ा टीवी ब्रांड है।

कोका-कोला ने जारी किए 2024 की पहली तिमाही के नतीजे

नई दिल्ली। एजेंसी

ग्लोबल यूनिट केस वॉल्यूम में 1% की बढ़ोतरी हुई शुद्ध राजस्व 3% बढ़ा ऑर्गेनिक रेवेन्यू (नॉन-जीएएपी) में 11% की वृद्धि दर्ज की गई। वैश्विक रिलीज में भारत भारत में, कोका-कोला ने 2024 की पहली तिमाही के नतीजों में कुछ खास बातें बताई।

डिजिटल क्षमताओं में विस्तार जारी

कोका-कोला ने उपभोक्ताओं और ग्राहकों के साथ अपने रिश्ते मजबूत करने के लिए डिजिटल टूल का लाभ उठाना जारी रखा है। भारत में, रिटेलर्स ऐप के जरिए थोक ऑर्डर देने के लिए कोक बडी पर एआइ-पावर्ड सजेस्टेड ऑर्डर रिकमेंडेशन का फायदा उठा रहे हैं। कोक बडी ग्राहकों से जुड़ाव

बनाने वाला एक प्लेटफॉर्म है।

बाजार में प्रदर्शन

वैश्विक चुनौतियों के बावजूद, कोका-कोला ने भारत में वृद्धि दर्ज की है। फिलीपींस, भारत, वियतनाम और इंडोनेशिया में हुई वृद्धि, चीन में हुई गिरावट से कहीं ज्यादा रही है।

संरचनागत बदलाव

जनवरी और फरवरी 2024 में, कंपनी ने भारत के कुछ क्षेत्रों में बॉटलिंग का काम फिर से शुरू किया। कंपनी ने भारत में कुछ क्षेत्रों में बॉटलिंग कारोबार की रिफ्रैंचाइजिंग से संबंधित 29.3 करोड़ डॉलर का शुद्ध लाभ दर्ज किया है।

रेलवे ने यूटीएस मोबाइल ऐप पर जियो-फेंसिंग प्रतिबंधों की बाहरी सीमा समाप्त

अब घर बैठे यूटीएस टिकट बुक करें, 'डिजिटल इंडिया' पहल को बढ़ावा और प्रोत्साहन

इंदौर। आईपीटी नेटवर्क

यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप पश्चिम रेलवे सभी स्टेशनों के लिए उपलब्ध है। टिकट प्राप्त करने का यह तरीका रेल यात्रियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हो गया है तथा अधिक से अधिक लोग इस मोबाइल ऐप का उपयोग कर रहे हैं, जिससे ऐप से टिकट बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई है। यात्री सुविधा को और बढ़ाने तथा यात्रियों के लिए टिकट बुक करने की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए भारतीय रेल ने अब यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप पर जियो-फेंसिंग प्रतिबंध की बाहरी सीमा को समाप्त कर दिया है। यह तीन 'सी' संपर्क रहित टिकटिंग, कैशलेस लेनदेन और टिकट बुक करते समय ग्राहक सुविधा और अनुभव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डिजिटलीकरण पहल का हिस्सा है। यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप शुरू करने का मुख्य उद्देश्य डिजिटल टिकटिंग मोड को प्रोत्साहित करना, सेल्फ टिकटिंग को बढ़ावा देना और यह सुनिश्चित करना है कि यात्री कतारों की परेशानी का सामना किए बिना टिकट खरीद सकें। हाल ही में, रेलवे ने दूरी प्रतिबंध को संशोधित किया है और अब यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप पर जियो-फेंसिंग प्रतिबंध की

बाहरी सीमा को समाप्त कर दिया है। जियो-फेंसिंग की बाहरी सीमा हटने के बाद यात्री अब घर बैठे ही किसी भी स्थान से किसी भी गंतव्य के लिए टिकट बुक कर सकते हैं। हालाँकि, यात्रियों को टिकट बुक करने के एक घंटे के भीतर सबर्बन सोर्स स्टेशन से तथा गैर-उपनगरीय ट्रेनों के मामले में तीन घंटे के भीतर ट्रेन पकड़नी होगी। यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप का उपयोग करने का एक अतिरिक्त लाभ यह है कि यात्रियों को आर-वॉलेट रिचार्ज पर 3% बोनस मिलेगा। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल अपने सम्माननीय ग्राहकों से आग्रह करती है कि वे मोबाइल टिकटिंग ऐप पर यूटीएस के उपयोग को बढ़ावा दें और इसके उपयोग से जुड़े हितों का लाभ उठाएँ। पश्चिम रेलवे द्वारा आधुनिक टिकटिंग मोड के उपयोग को लोकप्रिय बनाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं और यह इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को प्राप्त करना जारी रखेगी। इस संबंध में रतलाम मंडल द्वारा महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों पर विभिन्न प्रचार अभियान आयोजित किए जा रहे हैं। अधिक से अधिक यात्रियों के बीच रुचि पैदा करने, यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप की सुविधाओं और लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए तथा यूटीएस ऑन मोबाइल टिकटिंग ऐप के लाभों के बारे में युवाओं तक पहुंचने के लिए पश्चिम रेलवे के आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर क्रिएटिव और इंफोटेनमेंट आधारित वेबकार्ड पोस्ट किए जाते हैं।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक सचिन बंसल द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13, प्रेस काम्प्लेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 18, सेक्टर-डी-2, सांवेर रोड, इंडस्ट्रीयल एरिया, जिला इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- सचिन बंसल

सूचना/चेतावनी- इंडियन प्लास्ट टाइम्स अखबार के पूरे या किसी भी भाग का उपयोग, पुनः प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग बिना संपादक की अनुमति के करना वर्जित है। अखबार में छपे लेख या विज्ञापन का उद्देश्य सूचना और प्रस्तुतिकरण मात्र है। अखबार किसी भी प्रकार के लेख या विज्ञापन से किसी भी संस्थान की सिफारिश या समर्थन नहीं करता है। पाठक किसी भी व्यावसायिक गतिविधि के लिए स्वविवेक से निर्णय करें। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र इंदौर, मप्र रहेगा।